श्री गणेशाय नमः

नवरात्रि संक्षिप्त घटस्थापन विधि

सामग्री– रोली, सिंदूर, पीसी हुई हल्दी, लाल मौली धागा, रुई की बाती, खड़ी बाती, मिट्टी का छोटा घड़ा, घड़े के मुख पर ढकने हेतु मिट्टी का बड़ा दीपक, शुद्ध मिट्टी, गोबर गोमूत्र मिश्रजल, यव (जौ), पीली सरसों, अखण्डदीप, घृत, तिल का तेल, दुर्गा की चित्रप्रतिमा, गुगल की धूपबत्ती या गुगल, गोबर कण्डे, (प्राप्त हो तो – गौशाला अश्वशाला गजशाला नागबील नदीसंगम की मिट्टी) बड़ी सुपारी २, ताम्बूल २, लौंग , इलायची, किशमिश, साकर, जटादार नारियल, छोटी चुनरी , भोग के लिये साकर गुड़ चने नारियल ड्रायफ्रूट जो भी सम्भव हो परन्तु जलमिश्रपक्का अन्न मिठाई का भोग न लें, ऋतु अनुसार देशीफल, पुष्प, बिल्वपत्र, पुष्पमाला, दूर्वा, आम के पत्ते ५, घण्टा।

०१. सूर्योदय से पूर्व ब्राह्ममुहूर्त में निद्रा त्याग कर तीन कुल्ले करें। आचमन कर दुर्गाजी का मानसिक स्मरण करें। मलमूत्र त्याग के बाद मिट्टी जल के संयोग से एकवार गुप्तांग एवं तीनबार गुदाद्वार को धोवें (मिट्टी के अभाव में मुलतानी मिट्टी का उपयोग करे)। तदनन्तर पुरुष १७ बार एवं स्त्री ६ बार मिट्टीजल के संयोग से दोनों हाथो को धोवें। फिर १६१ बार दोनो पैरों को तथा २–२ वार दोनो हाथ को धोवें। पुरुष १२ कुल्ले करे, स्त्री ६ कुल्ले करे (बिना जलमिट्टी के शौचाचार के व्रत में अधिकार ही प्राप्त नहीं होता)।

०२. शौचाचमन – तत्पश्चात् पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख आसीन होकर शुद्धजल से तीन आचमन करें , हाथ धोकर अंगुठे के मूल जहाँ लोम नहीं उगतेय वहाँ से दो बार जल द्वारा होठों को साफ करें। तदनन्तर हाथ से भूमिपर थोड़ा जल छिड़कें, थोड़ा पैरों पर जल छिड़कें, सभी अंगुलियों से मुख का स्पर्श कर हाथ धोवें, तर्जनी अंगुठे के संयोग से नासिका, अनामिका अंगुठे के संयोग से नेत्र तथा कान कनिष्ठिका अंगुठे से नाभि, करतल से हृदय, सभी अंगुलियों से सिर का स्पर्श कर हाथ धोवें। पुनः दोनो कन्धों का सभी अंगुलियों से स्पर्श करें।

०३. आंवले का पाउडर और तिलतेल थोडा मिश्रकर अभ्यंग स्नान कर शुद्धजल से गंगादि नदियों का स्मरण कर स्नान करें।

०४. (विशेष) स्त्रीयाँ अपने बाल खुले न रखे, सुवासिनी हो तो सैंथे में सिंदूर ललाट में रोली का टिका लगायें। पुरुष भी रोली का टिका लगायें।

०५. सूर्य नारायण को तांबे के पात्र में बारम्बार जल भर अर्घ्य प्रदान करें। नमस्कार करे।

०६. **'दुर्गे दुर्गे'** इस प्रकार यथाशक्ति नामजप करें।
दुर्गानामजप सूर्यमण्डलमें स्थित दुर्गा को अर्पण करें – अनेन मत् कृतेन दुर्गानामजपाख्येन कर्मणा सूर्यमण्डलेस्थित दुर्गा प्रीयताम्।
०७. पूर्व उत्तर या ईशान (पूर्व और उत्तर के मध्य) में अपने हाथ के नाप की समचतुरस्र मिट्टी ईंट की अर्थात् १८ईंच की लम्बी–चोड़ी चौकी बनावें ।
०८. शुद्ध मिट्टी में गोबर मिश्र जल थोड़ा–थोड़ा छिड़ककर नम नमी वाली मिट्टी रखें ।अधिक न भिगोवें।
०६. **कुम्भस्थापन विधा –**
– सपत्नीक हो तो पुरुष के दक्षिणभाग में पत्नी बैठे। अविवाहित हो तो अकेले भी पूजा कर सकते हैं।
– आचमन – तीन बार आचमन करें ।
ह्रीं आत्मतत्त्वाय नमः। ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः। ह्रीं शिवतत्त्वाय नमः। चौथी बार हाथ धोने के पात्र में हाथ धोवे । **ह्रीं सर्वतत्त्वाय नमः।**
– श्वास लेते रोकते और छोड़ते हुए दुर्गा नाम स्मरण करे।
– **संकल्प –** सपत्नीक हो तो पत्नी को अपने पति के हाथ का केवल स्पर्श करना हैं। विष्णुः विष्णुः विष्णुः आश्विनमासे (चौत्रमासे)शुक्लपक्षे प्रतिपत् तिथौ मम सकुटुम्बस्य महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती कुलदेवता प्रीति द्वारा सर्व आपत् शांति पूर्वकं चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये **(अखण्डभारत एवं हिन्दूराष्ट्रसंस्थापनार्थं) श्रीमद्गुरुप्रेरणया** अद्यप्रभृति नवमदिनपर्यन्तं प्रत्यहं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती दुर्गा पूजन पूर्वकं (अखण्डदीपप्रज्वालनं/कुमारीपूजां/दुर्गामन्त्रजपं /विप्रद्वारा सप्तशतीश्रवणं शारदीय (वासंतीय) नवरात्रमहोत्सवाख्यं कर्म करिष्ये।
– पृथ्वीपर अपनी आस–पास थोड़ा जल छिड़कें–

पृथ्वी त्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुना उद्–धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

– **दुर्गानामस्मरण कर** अपने चारों ओर थोड़ी पीली सरसों बिखेर दें। पुरुष अपने वामपाद का तीनवार भूमिपर घात करे, तीन ताल देवें। अपने शरीरपर जल छिंड़के **'पुण्डरीकाक्षाय नमः'** ।
– बड़े पूजा जलपात्र की पूजा–
• जल पात्र को नमस्कार करें – **ह्रीं वरुणं सांगं सपरिवारं सतीर्थान् सनद्यः अस्मिन् जले आवाहयामि।**
• जल पात्र की चारों और रौली का टिका लगाकर जल पात्र के पास पुष्प छोडे – **सतीर्थवरुणाय नमः।**
•**'वम् वम्'** इस प्रकार नमस्कार करते हुए **आठ बार वरुणबीज का जप** करें। बडे जल पात्र में से पूजा योग्य सभी जल पात्र में थोड़ा–थोड़ा जल मिश्र करें।
• फिर उसमें से थोडा जल वाम हाथ में लेकर दक्षिणहाथ से पुष्प द्वारा सभी पूजा सामग्री पर जल छिंड़कें।
– **गणपतिपूजन –**
• किसी पात्र में अक्षत की ढेरी पर १ सूपारी रखें।
आवाहन –सुपारी पर अक्षत चढावें।
ह्रीं सिद्धिबुद्धिसहीताय महागणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि। सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।
• **ध्यान –** पाश अंकुश हाथीदांत और वरद मुद्रा धारण किये रक्त वस्त्र में आभूषणों से विभूषित अपनी दोनो पत्नी के हाथों से अनेक प्रकार के सुखभोगनेवाले महागणपतिजी का मैं अपने चित्त में ध्यान करता हूँ।
• **आसनदान** –गणपति के पास अक्षत चढावें ।

ह्रीं श्रीमहागणपतये नमः आसनं कल्पयामि।

• पाद्यम् – गणपतिजी के सामने किसी जल छोड़ने के पात्र में चम्मचभर जल छोड़े – **ह्रीं श्रीमहागणपतये नमः पाद्यजलं कल्पयामि।**

• अर्घ्यम् – रोली अक्षत पुष्प मिश्र जल को जल छोड़ने के पात्र में छोड़ें ।
ह्रीं श्रीमहागणपतये नमः हस्तार्घ्यम् कल्पयामि।

• **आचमनम्** – जल छोड़ने के पात्र में जल छोड़कर गणपति जी को आचमन करवाने की भावना करें–
ह्रीं श्रीमहागणपतये नमः आचमनीयम् कल्पयामि।

• **पूजनम्** – गणपतिजी को रोली का टिका करें , अक्षत चढावें, पुष्प और दूब चढ़ावें– **ह्रीं श्रीमहागणपतिं पूजयामि**।

• **धूपनिवेदन**– देवता के वामभाग में (अपने दक्षिणभाग के सामने) गणपति जी को धूप प्रदान करें।
ह्रीं श्रीगणपतये नमः धूपं आघ्रापयामि।

• **दीपनिवेदन–** देवता के दक्षिणभाग में (अपने वामभाग के सामने) गणपतिजी को दीपप्रज्ज्वलन कर प्रदान करें– **ह्रीं श्रीमहागणपतये नमः दीपं दर्शयामि।**

• **नैवेद्य** निवेदन – देवता के सामने गुड़ नैवेद्य रखें – ह्रीं श्रीमहागणपतये नमः नैवेद्यम् कल्पयामि।

• नमस्कार –

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अपराधान् क्षमस्व।

• गणपतिजी का **विसर्जन** करें – **प्रयान्तु गजानन !**

———————————————————————

– **शक्तिबीज मन्त्र** से अपने अंगो में मन्त्रमय दिव्य तनु की भावना करते हुए **न्यास** करें।

• दोनो हाथ की तर्जनी से अंगुठे का स्पर्श– **ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः**।
• अंगुठे से तर्जनी का स्पर्श – **ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः**।
• अंगुठे से मध्यमा का स्पर्श – **ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः**।
• अंगुठे से अनामिका का स्पर्श – **ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः**।
• अंगुठे से कनिष्ठिका का स्पर्श – **ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः**।
• दोनों हाथ के करतल और करपृष्ठभागों का स्पर्श – **ह्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**।
• दक्षिणहाथ से हृदय छाती के मध्यभाग का स्पर्श – **ह्रीं हृदयाय नमः**।
• दक्षिणहाथ की अंगुलियों से शिर का स्पर्श – **ह्रीं शिरसे नमः**।
• शिखा का स्पर्श – **ह्रीं शिखायै नमः**।
• दक्षिणहस्त वाम कन्धे पर और वामहस्त दक्षिण कन्धे पर रखें – **ह्रीं कवचाय नमः**।
•भृकुटी सहित दोनों आँखों का तर्जनी मध्यमा एवं अनामिका के संयोग से स्पर्श – **ह्रीं नेत्रत्रयाय नमः**।
• अपनी चारों ओर तर्जनी अंगुठे के संयोग से चक्कर बजाते हुए ताली देवें – **ह्रीं अस्त्राय नमः**।

– पूजा की मिट्टी से बनी चौकी पर गोबरजलसंसिक्त मिट्टी बिछावें । उसमें यव पीली सरसों चारों ओ डाल देवें।

उसके ऊपर पूजितजल से पूर्ण मिट्टी के अच्छिद्र घड़े को रखें। घड़े में सुपारी, प्राप्त उचित मिट्टी, दूर्वा, यव, पीली सरसों, हल्दी डालें। घड़े के कण्ठ में नवतार वाले सूत्र को बांधे अथवा तो मौली को बाँधे। आम के पत्तों को घड़े के मुख में चारों ओर बिछाकर रख देवें, उसपर मिट्टी का बड़ा दीपक रखें, उस दीपक में अक्षत रखे । श्रीफल को चुनरी बांधकर दीपक पर तिरछा यानी शिखावाला भाग अपनी ओर हो – रखे ।

– घड़े के सहारे दुर्गा की **चित्रप्रतिमा** को रखे।

– **अखण्डदीपस्थापना** – अपनी शक्ति अनुसार घृत या तिलतेल अथवा वनस्पतिजन्यतैल का दीपक 'ह्रीं' बीज बोलकर प्रकटावें। (देवीजी के वामभाग में तेलदीपक और दक्षिणभाग में घृतदीपक रहेगा)

– दीपक की गंधाक्षतपुष्प से पूजा करे – **अखंडदीपाय नमः** ।

– **नमस्कार** करें –

भो दीप देविरूपस् त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत् व्रतं समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।।

– घण्टापूजन – गंधाक्षतपुष्प से घण्टा की पूजा करें– **ह्रीं जगद् ध्वनि मन्त्र मातः नमः।**

– घण्टावादन कर समस्तदूरितशक्तियों का शमन हेतु प्रार्थना करें –

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्त दैत्यसैन्यानां तेजो वध विधायिना।।

घण्टा को अपनी वामभाग के सामने किसी आधार पात्र पर रखे।

– **दुर्गाकुम्भपूजन** – दक्षिणहाथ में अक्षत रखें और वामहस्त से घण्टा बजाते रहें।

दुर्गा आवाहनम् –

एह्येहि भगवत्यंब ! शिवलोकात् सनातने !।
गृहाण मम पंजाब च शारदीयां सुरेश्वरि।।
दुर्गे देवि ! इहागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।
पूजाभागान् गृहाणेमं अष्टाभिः शक्तिभिः सह।।
स्वागतं भवत्येम्बं शिवलोकात् शिवप्रिये।
प्रसाद कुरु मे भद्रे भद्रकाली नमोऽस्तु ते।।
धन्योहं कृतकृत्योहं सफलं जीवनं मम।
आगतासि यतो मातर्माहेश्वरि ममालयम्।।
अद्य मे सफलं जन्म सार्थकं जीवनं मम।
पूजयामि यतो दुर्गां पुण्यक्षेत्रे च भारते।।
स्वागतं देवदेवेशि मद् भाग्यात् त्वमिहागता।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय।।
सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितम्।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देविगणैः सह।।

– कुम्भ के श्रीफल पर अक्षत छोडें–

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपां त्रिगुणात्मिकां दुर्गां आवाहयामि स्थापयामि।।

– नवरात्रि समाप्ति पर्यन्त नित्यार्चनविधिः

• ध्यानम् – दशभुजा कात्यायनी देवी तीनों देवों अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, और शिव की जननी हैं। जटाजूट से युक्ता, अर्धचन्द्र से विभूषिता, त्रिनेत्रा,पद्म और चन्द्र के सदृश प्रसन्न मुखवाली, अतसीके फूल अथवा मरकत समान वर्णवाली, प्रसन्नभाव से अवस्थिता, सुन्दर नेत्रवाली, नवयुवती, सभी आवरणों से

भूषिता,सुन्दर तोंदवाली, बड़े स्तनवाली, त्रिभंगस्थान में रहनेवाली, महिषासुर की मर्दन करनेवाली, दायें हाथों में ऊपर त्रिशूल, फिर क्रमशः खड्ग,चक्र, शर,और,शक्ति हैं। बाएं हाथों में खेटक, धनुष, पाश, अंकुश और घण्टा अथवा परशु है । नीचे में छिन्न शिर–महिष है। कटे हुए धड़से निकला खड्ग हाथमें लिए असुर देवीके त्रिशूलसे हृदय में विद्ध हैं । असुर की आँतें निकली हैं, जिस कारण लहू के निकलने से असुर का पूर्णशरीर लहूलुहान हैं। उसकी लाल आँखे विस्फारित हैं.वह देवी द्वारा नागपाश में बद्ध हैं। उसकी भ्रृकुटी ऐसी हैं कि मुखमण्डल भीषण दिखता हैं. देवी नें पाशयुक्त,वामहस्त से उसके केशों को पकड़ रखा है। इस प्रकार संस्कृत में ध्यान करना चाहिये –

कात्यायन्याः प्रवक्ष्यामि मूर्तिं दश–भुजां तथा।
याणामपि देवानामनुकारण–कारिणीम्।।
जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दु कृत शेखराम्।
लोचनत्रय संयुक्तां पद्मेन्दु सदृशाननाम्।।
अतसी पुष्प वर्णाभां सुप्रतिष्ठां प्रलोचनाम्।
नव यौवन सम्पन्नां सर्वाभरण भूषिताम्।।
सुचारु दशनां तद्वत् पीनोन्नत पयोधराम्।
त्रिभङ्ग स्थान स्थंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्णबाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत्।।
खेटकं पूर्ण चापं च पाशमंकुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं वाऽपि वामतः सन्निवेशयेत्।।
अधस्तान्महिषं तद्वत् विशिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरश् छेदोद्भवं तद्वत् दानवं खड्गपाणिनम्।।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्र विभूषितम्।
रक्त रक्ती कृताङ्गश्च रक्त विस्फारितेक्षणम्।।
वेष्टितं नाग पाशेन भ्रुकुटी भीषणाननम्।
स पाश हस्तेन धृत केशं च दुर्गया।।

==

जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।।

इस मन्त्र को प्रत्येक उपचार के प्रारम्भ में उच्चारण करना हैं। अतः इसे याद रखकर इसका अनुसन्धान रखें ।

(१) **आसनदानम्** – पुष्पों का आसन प्रदान करे –

(जयंती मंगला काली...) श्रीमन्महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपादुर्गायै नमः आसनं कल्पयामि।

(२) **पाद्यम्** – स्थापित कुम्भ की चौकी पर चम्मच से जल छोड़कर देवीजी के चरणप्रक्षालन करे –

(जयंती मंगला काली...) श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीस्वरूपादुर्गायै नमः पाद्यं कल्पयामि।

(३) **अर्घ्यम्** – गंधाक्षतपुष्पमिश्रजल का कुम्भपर अर्घ्य देवें –

(जयंती मंगला काली...) श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपा त्रिगुणात्मिका दुर्गायै नमः अर्घ्यम् कल्पयामि।

(४) **आचमनीयम्** – देवीजी को शुद्ध जलपान करवाने के लिए चम्मचभर जल कुंभपर छोडें–

(जयंती मंगला काली...) श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपा त्रिगुणात्मिका दुर्गायै नमः आचमनीयम् कल्पयामि।

(५) **स्नानम्** – देवीजी को स्नान कराने हेतु पुष्प से कुंभपर जल छिड़के– **(जयंती मंगला काली...)श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपा त्रिगुणात्मिका दुर्गायै नमः स्नानं कल्पयामि।**
(६) **वस्त्रदानम्** – **(जयंती मंगला काली...) श्रीमन्महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपा त्रिगुणात्मिका दुर्गायै नमः वस्त्रोपवस्त्रे कल्पयामि।**
आचमनदान – वस्त्रान्ते आचमनीयम् कल्पयामि।
(७) आभूषणदान(अभावे अक्षत)– (जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपा त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः अलंकारान् आभूषणान् कल्पयामि।
आचमनदानम् – तदन्ते आचमनीयम् कल्पयामि।
कनिष्ठिका अंगुष्ठसंयोग से
(८)**गंधदानम्** – देवीजी के कलशपर रहे नारियल में दुर्गाजी को रोली का टिका करें, चित्रप्रतिमा को टिका करें–**(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः गन्धान् कल्पयामि।**
(९) **पुष्पार्पण** – तर्जनी अंगुष्ठ संयोग से पुष्प बिल्वपत्र और पुष्पमालिका अर्पण करे–**(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः पुष्प बिल्वपत्र पुष्पमालिकां च कल्पयामि।**
(१०) **आवरणपूजा** – (कुंभपर अक्षत चढाते रहे)
मध्ये आद्या महालक्ष्म्यै नमः। दक्षिणे आद्या महाकाल्यै नमः। वामे आद्या महासरस्वत्यै नमः।। १।।
देव्या पृष्ठतः – स्वरया सह विधात्रे नमः। दक्षिणे गौर्या सह रुद्राय नमः। वामे लक्ष्म्या सह हृषिकेशाय नमः।।२।।
देव्याग्रे – अष्टादशभुजायै नमः। वामे –दशाननायै नमः। दक्षिणे – अष्टभुजायै नमः।।३।।
दक्षिणे – सिंहाय नमः / वामे –महिषाय नमः।।४।।
अष्टदिक्षु – असितांग भैरवाय नमः। रुरुभैरवाय नमः। चंडभैरवाय नमः। क्रोधभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवाय नमः। कपालभैरवाय नमः। भीषणभैरवाय नमः। संहारभैरवाय नमः।।५।।
पुष्पांजलि –
दयाब्धे त्राहि संसारात् भीतः मृत्युभवार्णवात्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।।
(नामावलिभिः पूजनम्)
घण्टा बजाकर
(११) **धूपनिवेदन** देवीजी के वामभाग में – **(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः धूपं आघ्रापयामि।** उत्तान(आकाशगामी) तर्जनी अंगुष्ठयोग से धूप मुद्रा बतावें।

घण्टाबजाकर
(१२)**घृतदीप**– देवीजी की आँखो से लेकर पैरों तक दीपक घूमाकर बतावे–**(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः दीपकं दर्शयामि।** मध्यमा अंगुष्ठ के संयोग से दीपमुद्रा बतावें।
(१३) **नैवेद्यनिवेदन** – देवी जी के सामने पाटला अथवा पत्तल रखकर उसपर जल से चतुरस्र मंडल करे तदुपरि नैवेद्यपात्रों को रखें, घण्टा बजावें –**(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः नैवेद्यं कल्पयामि।** अनामिका अंगुष्ठसंयोगात्मिका नैवेद्यमुद्रा बतावें। फिर पांचो अंगुलियो को मिलाकर ग्रासमुद्रा बतावें। **जल अर्पण** करे – **पूर्वापोशानं**

समर्पयामि। भोग लगाते समय परदा लगावे अथवा तो पूजा के कक्ष में रहे सभी सज्जनों को आँखे बंध करलेनी चाहिये।

प्राणाय नमः। अपानाय नमः। व्यानाय नमः। समानाय नमः
उदानाय नमः। मध्ये पानीयं कल्पयामि।

अर्चामन्त्र (जयंती मंगला काली...) अथवा 'नमश् चंडिकायै' मन्त्र का **१० बार जप** करना चाहिये। चम्मच से तीन बार जल अर्पण करें **'उत्तरापोशानं कल्पयामि। हस्तप्रक्षालनम्। मुखप्रक्षालनम् कल्पयामि।**
(१४) **ताम्बूलदानम्** – ताम्बूल पर सुपारी लौंग इलायची किशमिश साकर रखकर देवीजी के सामने रखे **(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः मुखवासपूगीफलताम्बूलं कल्पयामि।**
(१५) **फलप्रदानम् – (जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः फलं कल्पयामि।**
(१६) सिक्कोंको धोकर **दक्षिणा** प्रदान करे **(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः दक्षिणां कल्पयामि।।**
(१७) **नीराजनम्** –घण्टा बजाते हुए तीन पांच अथवा सात खडी बाती प्रगटाकर देवीजी की आरती उतारे (पूर्वोक्त अर्चामन्त्र) इच्छनीय हो तो प्रादेशिकभाषा में **आरती** का गान भी करे।
(१८) **प्रदक्षिणा**– सम्भव हो तो १ प्रदक्षिणा करे अथवा प्रदक्षिणा करने की भावना करें **(जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः प्रदक्षिणाम् कल्पयामि।**
(२०) **पुष्पांजलि – (जयंती मंगला काली...) श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः पुष्पाञ्जलिः कल्पयामि।**
(२१) नमस्कार करते हुए **प्रार्थना** –

स्वस्तिः प्रजाभ्यः परिपालयंतां
न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः ।।
गो ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनोभवंतु ॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां ह्रदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥
शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
रूपन् देहि जयन् देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांव् श्च देहि मे।

श्रीमन् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपायै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः प्रार्थना पूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रत्येक नाम के अन्त में पुष्पार्पण अथवा अक्षतार्पण करे –
शैलपुर्त्यै नमः। ब्रह्मचारिण्यै नमः। चन्द्रघण्टायै नमः। कूष्माण्डायै नमः। स्कन्दमात्रे नमः। कात्यायन्यै नमः। कालरार्त्यै नमः। महागौर्यै नमः । सिद्धिदार्त्यै नमः।

पूजार्पण – (जयंती मंगला काली...) अनेन यथामिलितः उपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनेन दुर्गा प्रीयताम्। तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु। तीनवार विष्णुजी का स्मरण करे **'ह्रीं विष्णवे नमः** (३)

घटस्थापनोत्तर नवरात्रि विधिः

दशवें (१०)उपचार में जहाँ नामावलिभिः पूजन लिखा हैं वहाँ प्रतिदिन एक–एक नाम द्वारा १००–१०० नामों की वृद्धि करते हुए अन्तिम दिन को सहस्रनाम से अक्षत पुष्प बिल्वपत्र गुडहल करेन चम्पा आदि कोई भी सामग्री चढाते हुए पूजन पूर्ण करना हैं। (लिंक को गुगललेन्स द्वारा कॉपी करके सर्च करने से सहस्रनामावली दर्शनीय होगी वैदिक प्रणव के स्थान पर कुछ भी नहीं पढना हैं। सहस्रनामावली के उच्चारण में त्रुटि लग रही हो तो केवल 'दुर्गायै नमः' इस मन्त्र से शतोत्तरवृद्धिक्रम से प्रतिदिन पूजन कर सकते हैं)

https://www-drikpanchang-com/deities&namavali/goddesses/durga/1000&durga&names-html

संकल्प – नवरात्रव्रताङ्गत्वेन कुमारीपूजनमहं करिष्ये।

• २ से १० वर्ष की कुमारी को स्नान करवाकर नूतन वस्त्र(चौली आदि)धारण करवाएं यथाशक्ति अलंकार अर्पण करे। शुद्ध नया आसन बैठने को देवें (कौमारी पूजा में वर्णभेद नहीं करना चाहिये परंतु बिना स्नान करवाएं कौमारीपूजा अशुद्ध रहती हैं। आजकल लोग वहमी भी होते हैं। इसलिये अपने परिवार की कुल कुमारी का ही पूजन करें)

• कौमारी को रोली का **टिका** करे , अक्षतप्रदान करें **'ह्रीं कुलकौमार्यै नमः।। साक्षतगन्धं समर्पयामि।**

• **पुष्पमाला** पहनावें – **ह्रीं कुलकौमार्यै नमः । पुष्पं पुष्पमालिकां च समर्पयामि।।**

• **धूपदीप** प्रदान इसी मन्त्रों से करे – **धूपं समर्पयामि / दीपं दर्शयामि**।

• जमीनपर जल से चतुरस्र मंडल करके उसपर **भोजनपात्र** रखकर निवेदित करें – **ह्रीं कुलकौमार्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।**

• कौमारी को **आचमन** करावें – **पूर्वापोशानं समर्पयामि।**

• नमस्कार करते हुए भोजन करने को कहें – **प्राणाय नमः। अपानाय नमः । व्यानाय नमः। समानाय नमः। उदानाय नमः।**

• **जल** पात्र प्रदान करे – **मध्ये पानीयं समर्पयामि**।

• भोजनान्ते पुनः बिना हाथ धोएं **आचमन** प्रदान करे – **'उत्तरापोशानं समर्पयामि।** हाथ धूलावें – **हस्तप्रक्षालनम्।** मुख धूलावें – **मुखप्रक्षालनम्**। हाथपौंछे – **प्रोञ्छनम्** ।

• **ताम्बूलबीड़ा** प्रदान करे, **उपहार और दक्षिणा** भी यथाशक्ति प्रदान करे – **क्लीं कुलकौमार्यै नमः – ताम्बूलमुखवासदक्षिणां च समर्पयामि।**

• **नमस्कार** करे – **मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यां पूजयाम्यहम्।।** (सम्भव हो तो दुर्गा **अष्टोत्तरशत नामों** का उच्चारण करे)

• **समर्पण – अनया पूजया कुलकौमारी प्रीयताम् ।।** (प्रतिदिन सम्भव हो तो एक–एक कुमारी अधिक पूजनी चाहिये)

व्रतनियमग्रहणम् – संकल्पजल हाथ में रखे –**'अद्याहं देवदेवेशि करिष्ये व्रमुत्तमम्। नवरात्रं करिष्यामि दुःख दारिर्द्य नाशनम्। करिष्ये शास्त्रविधिना निर्विघ्नेन समाप्यताम्। नवरात्रमुपोष्येहं रक्ष मां त्वं सुरेश्वरि।। प्रतिपद्दिनमारभ्य व्रतस्थोहं (स्त्री को बोलना हैं '' व्रतस्थाह)महेश्वरि । नवदुर्गे हि देवेशि निर्विघ्नं कुरु मे सदा।। नवरात्रं यथाशक्त्या सर्वभोगविवर्जितः (स्त्री –विवर्जिता)। उपोषणं करिष्यामि त्वमेव शरणं मम।। इदं व्रतं मया देवि गृहीतं तव सन्निधौ । निर्विघ्नतां समायातु त्वत् प्रसादान् महेश्वरि। अद्य स्थित्वा निराहारो(फलाहारो)(स्त्री – निराहारा/ फलाहारा) जितक्रोधो (स्त्री –जितक्रोधा) जितेन्द्रियः (स्त्री–जितेन्द्रिया) दशमेहनि(नवमेहनि) भोक्ष्यामि शरणं त्वं सुरेश्वरि।।।।**

• यथाशक्ति – जयंती मंगला काली ०० आदि मन्त्रजप करे। अथवा 'दुर्गे दुर्गे ' नामजप करे।

• विप्रद्वारा सप्तशतीपाठ श्रवण करे। नवमी के दिन दुर्गा की विशेष हजारनामों(हजार नाम के उच्चारण में त्रुटि लग रही हो तो केवल 'दुर्गायै नमः' मन्त्र) से अक्षतार्पणपूजा करे ।

• सगडी को मिट्टीजल से साफकर केवल दूध में बनी घृतयुक्त **मीठीखीर का बलिदान** दैवे –
बलिदानविधिः – संकल्प –**मम सकुटुम्बस्य सर्वारिष्टशान्ति सर्वाभिष्टकामसिद्धि कल्पोक्त फलवाप्तिद्वारा श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं पायसबलिप्रदानं करिष्ये।**

• किसी पात्र में खीर को देवीजी के सामने रखे
(पूर्वोक्त अर्चामन्त्र –जयंती मंगला काली ०० आदि मन्त्र से दुर्गा का गंधाक्षतपुष्पों से पूजन करें)

• खीर के पात्र के पास प्रज्वलित दीपक रखकर गंधपुष्प रखे **'पायस बलिद्रव्याय नमः'**।

• संकल्प करे – दुर्गायै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै योगिनीकोटिगणसहितायै इमं सदीपं पायसबलिं समर्पयामि।

• नमस्कार – भो दुर्गे बलिं गृहाण मम अखिल सकुटुम्बस्य अभ्युदयं कुरु (हिन्दूराष्ट्रं कुरु) आयुःकर्त्री पुष्टीकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदा फलदा भव ।

'शूलेन पाहिनो देवि ! पाहि खड्गेन चाम्बिके !।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

पुनः संकल्प – **एष बलिः श्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवतायै न मम।।** पुनः नमस्कार करे ।

(शास्त्रार्थ– दो दिन दशमी हो तो पहली दशमी को श्रवणनक्षत्र के चतुर्थचरण में विसर्जन और पारण करें। श्रवणान्त्यचरण का योग न हो तो दूसरे दिन दशमी को विसर्जन पारण करें। दूसरे दिन दशमी न हो तो पूर्वदिन में नक्षत्र हो न हो उसी दिन विसर्जन पारण करें। श्रवणनक्षत्र का योग हो तो अपराह्ण में भी विसर्जन कर सकते हैं अन्यथा पूर्वाह्ण में विसर्जन करना चाहिये। जिस दिन को विसर्जन हो उसी दिन को व्रतनियम को छोड़े उसी दिन को ही पारण करे।)

विसर्जनविधिः – दुर्गाजी का नियमितरूप से ध्यान आदि पूजा करनी चाहिये। विशेष कुलपरम्पारानुसार नव या अधिक नैवेद्य सामग्री का भोग लगाना चाहिये ।

(नवसामग्री – १ खीर २ पूड़ियाँ ३ उड़द के वड़े पापड़ आदि ४ उड़द के मालपूए ५ मूंग चने आदि का व्यंजन ६ पटोल आदि शाक ७ घृतयुक्त भात ८ मूंगदाल का सूप ६ एकभाग घृत दो भाग शहद तीनभाग दहीं का मिश्र मधुपर्क , फल आदि ध्ध्‌ सभी सामग्री घृत में तली भूनी हो पानी के जगह नारियल पानी या केल के पानी का उपयोग आटागूँदने , भात सूप आदि पकाने में हो परन्तु सामान्य जल का उपयोग न हो , अनुच्छिष्ट गंगाजल उपयुक्त हैं)

नियममोक्षण संकल्प –
चंडीसंतोषणार्थाय ये मया नियमाः कृताः।
अद्याहं मोचयिष्यामि तव तुष्ट्यै महेश्वरि।। गृहितनियमानां निवृत्तिरस्तु।।

प्रार्थना –

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे ॥

पुत्रान देहि धनं देहि सर्वान् कामांव् श्च देहि मे ॥१॥

महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अक्षत लेकर मन्त्रो के अन्त में देवी के कुम्भपर चढाकर देवी का **विसर्जन** करें–

उतिष्ठ देवि चामुंडे शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥

कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चंडिके ॥

व्रज स्रोतोजलं वृद्धयै स्थीयतां च जले त्विह ।

दुर्गे देवी जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥

संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय च ।

इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।।

रक्षार्थ त्वं समागत्य व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥

श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

धर्म की जय हो।

अधर्म का नाश हो।

प्राणियों में सद्भावना हो।

विश्व का कल्याण हो।

गौमाता की जय हो।

गौहत्या बंद हो।

भारत अखंड हो।

हर हिन्दू सनातनी हो।

हर हिन्दू सेना हो।